प्राक्कथन

प्रस्तावना

विभाजनगत संवेदना को लेकर जो कहानियाँ लिखी गई उनमें मूल संवेदना के अनुरूप ही कलात्मक रचाव है। रचनाकार को उस संवेदना को पाठक के रूबरू परिचय कराना था। लेखकीय संवेदना पाठकीय संवेदना बन जाती है। घटनाओं की प्रत्यक्षता और लेखक की वैचारिक निष्पक्षता कहानियों को और अधिक प्रमाणिक बनादेती है। कलात्मक संतुलन और घटनाओं का खुलापन संवेदना को समझने में पाठक के लिए प्रयाप्त सहायक हुआ है। एक बात और उल्लेखनीय है कि इन कहानियों में मानवीय करूणा का स्वरूप प्रमुख है। कहानियों को पढ़कर क्रूर और अत्याचारी लोगों के प्रति मनमें आक्रोश और विद्रोह उत्पन्न होता है। दूसरी ओर पीड़ित समुदाय के प्रति सहानुभूति, संवेदना और करूणा भाव उदित होता है। हिन्दी साहित्य के कथा जगत में इस संवेदना को छोडकर शायद ही कोई दूसरी संवेदना होगी जिसमें लेखक और पाठक को मानसिक धरातल पर इतना प्रभावित किया हो । इस संवेदना ने एक और ही कथा जगत की सृष्टि की है, जिसमें मानवीय करूणा और मानवीय अत्याचार की चरमसीमाएँ देखने को मिलती है। इन कहानीकारों ने इस मानवीय संवेदनाओं को एक सूत्र में पिरोकर सर्जनात्मक स्तर पर जिस रूपमें उज़ागर किया है, वह निःसंदेह प्रशंसनीय है। कहीं-कहीं भावात्मक उत्तेजना के कारण लेखक सम्प्रदाय विशेष का पक्षधर भी बन गया है। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि लेखक भी आखिर एक सामान्य मनुष्य है। अपने समुदाय, अपनी जाति, अपने देश, अपनी संस्कृति के प्रति उसका मोह स्वाभाविक ही है।

हिन्दी कहानी साहित्य की एक विशिष्ट धारा के रूप में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी लेखन का प्रारंभ हुआ। १८५७ इस्वीसन् के बाद परंपरागत हिन्दी कहानी साहित्य लेखन में विषयाधारित बदलाव आाया। भारत-पाकिस्तान विभाजन तत्कालीन युग की सबसे करूण त्रासदी रही। देश विभाजन के भयावह और बिभत्स यथार्थ को तत्कालीन कहानीकारों ने अपनी

कहानियों में चित्रित किया। देश विभाजन की सिहरन उत्पन्न करनेवाली कहानियों में स्नेह, मानसिक और शारीरिक आकर्षण, महत्वकांक्षा, धृणा, प्रतिहिंसा आदि से उत्पन्न सहज़ भावना की मानवतापूर्ण अभिव्यक्ति रही।

लेखक अपनी कहानियों के माध्यम से मानवीय जीवन की व्यापक गहराई में पैठता हुआ दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के द्वारा मैंने भारत विभाजन से उत्पन्न त्रासदी का मार्मिक चित्र खिंचनेवाले उन कहानीकारों (अज्ञेय, मोहन राकेश, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती, चतुरसेन शास्त्री, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', उपेन्द्रनाथ अश्क) व उनकी कहानियों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिनमें विस्तृत विषम परिस्थितियों में भी मानव को अपनी मानवोचित आस्थाएँ और साहस निरंतर बनाये रखने का संदेश दिया है। मैंने **"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी : भारत विभाजन के परिप्रेक्ष्य में - एक अध्ययन"** शीर्षक अंतर्गत शोध कार्य किया है।

प्रारंभिक अभ्यास से ही साहित्य के प्रति मेरा लगाव बढ़ता गया था। जैसे-जैसे मैं साहित्य के सम्पर्क में आया वैसे-वैसे साहित्य को अधिक जानने की, समझने की, जिज्ञाशा मेरे मस्तिष्क में जागृत होने लगी। काल्पनिक साहित्य की अपेक्षा यथार्थवादी साहित्य मुझे अधिक आकर्षित करता रहा। मेरे मनमें जागृत होनेवाली जिज्ञाशा को तृप्त करने के लिए एम.फिल. का शोध कार्य करने के पश्चात् पीएच.डी. का शोध कार्य करने के लिए योग्य मार्गदर्शक की तलाश में था। इस अवस्था में डॉ. एच. एन. वाघेला साहब ने मार्गदर्शक बनकर मेरी अन्वेषण की भूख को तृप्त करने के लिए दिशा-निर्देश करने की जिम्मेदारी ली।

विषय चयन के लिए मैं परम् वंदनीय गुरुवर्य मार्गदर्शक डॉ. एच. एन. वाघेला साहब से मिला उन्होंने मेरी रूची के मुताबिक शोध कार्य करने का सुझाव दिया। किस विद्या को लेकर शोध कार्य किया जाए यह प्रश्न सुलझाने में अधिक समय नहीं लगा क्योंकि बचपन से ही कहानियों के प्रति मेरा अधिक झुकाव रहा है।

डॉ. एच. एन. वाघेला साहब ने मेरी यथार्थवादी रूची को लक्षीत करके भारत विभाजन पर लिखी गई कहानियों को शोध कार्य का केन्द्रबिन्दु बनाकर यह सुझाव दिया कि मैं **"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी : भारत विभाजन के परिप्रेक्ष्य में - एक अध्ययन"** शीर्षक अंतर्गत

મહારાજા ...
ભાવનગર યુ...
ભાવનગર-૩૬૪૦૦૧.

शोध कार्य करू। गुरूवर्य द्वारा दिया गया शोध कार्य का यह विषय मुझे अत्यन्त पसंद आया और तुरंत ही मैं इस विषय पर शोध कार्य तैयार करने के लिए तैयार हो गया।

प्रथम अध्याय में मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी को प्रस्तुत किया है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना है गद्य विधाओं का आर्विभाव। १९वीं. शताब्दी के अत्तरार्ध में गद्य की विविध विधाएँ पश्चिम के प्रभाव में हिन्दी साहित्य में पनपने लगी। जैसे उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना आदि।

भारतेंदु युग, द्विवेदी युग और छायावाद युग में निरंतर हिन्दी कहानी का विकास होता रहा। सन् १९५० के बाद हिन्दी कहानी का विकास चरम् उत्कर्ष पर पहुँचा। स्वाधिनता प्राप्ति के पश्चात् रचित कहानियों को नई कहानी कहा गया। इस्वीसन् १९५७ में इल्हाबाद में हुए साहित्य संमेलन में 'नई कहानी' नाम को स्वीकृति दी गई। नई कहानी के बाद आधुनिक हिन्दी कहानी अनेक आंदोलनों से होकर गुजरी। जैसे नई कहानी आंदोलन, अ-कहानी आंदोलन, समांतर कहानी आंदोलन, सकिय कहानी आंदोलन, सहज कहानी आंदोलन, जनवादी कहानी आंदोलन, आँचलिक कहानी आंदोलन, सचेतन कहानी आंदोलन आदि। इन आंदोलनों ने हिन्दी कहानी को अत्यधिक समृद्ध बनाया।

इन सारे आन्दोलनों से गुजरनेवाली कहानी विधा ने मानवीय संवेदना के स्तर पर भारत-विभाजन के भयावह चित्रों को उभारने का काम किया। केवल धर्म जाति और वर्गसमूह के नाम पर इन्सानियत को हेवानियत की गर्त में कूदते देखा। सर्जकों की लेखनी लहू टपकती लाशों पर मरहम बनकर चला फिर भी होनी को कौन टाल सकता है। इसी वेदना की अभिव्यक्ति मेरे शोध का हार्द रही है।

द्वितीय अध्याय में मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षरों को प्रस्तुत किया है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी को नयी कहानी नाम से अभिहित किया गया है। भैरव प्रसाद गुप्त ने 'पत्रिका' कृति में उदबोधन के रूप में नयी कहानी की घोषणा की। इस समयावधि में विषय वस्तु के स्तर पर विभाजन की कहानियाँ पाई गई। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर में अज्ञेय कृत- 'शरणदाता', 'लेटरबक्स', 'बदला', 'रमन्ते तत्र देवता', 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई', 'नाारंगियाँ' (अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ), विष्णु प्रभाकर कृत- 'मेरा वतन'

(सिक्का बदल गया), 'अगम अथाह है', 'अधुरी कहानी', 'मेरा बेटा', 'तांगेवाला', 'सफर का साथी', 'वह रास्ता', 'पडोशी', 'हिन्दू', 'मैं जिंदा रहूंगा', 'शमशू मिस्त्री' (मेरा वतन), भीष्म- 'अमृतसर आ गया है', 'निमित्त' (सिक्का बदल गया), उपेन्द्रनाथ अश्क कृत- 'चारा काँटने की मशीन' (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ), 'ज्ञानी', 'टेबूल लैण्ड' (सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ), मोहन राकेश कृत- 'मल्बे का मालिक' (सिक्का बदल गया), 'परमात्मा का कुत्ता', 'कम्बल' (वारिस), 'क्लेम' (क्वार्टर), चन्द्रगुप्त विद्यालंकार कृत- 'मास्टर साहब', 'पतझड' (मेरी प्रिय कहानियाँ), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत- 'चौडा छुरा' (पोली इमारत), 'दो जख्म आग' (मुक्ता), 'मलंग' (यह कंचन सी काया), 'खुदा के सामने', 'दोजखःनरक', 'शाप' (ऐसी होली खेलो लाल), चतुरसेन शास्त्री कृत- 'रजील', 'लम्बग्रीव' (मेरी प्रिय कहानियाँ), कमलेश्वर कृत- 'जिन्दा मुर्दे' (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ), 'कितने पाकिस्तान', 'धूल उड जाती हैं', 'भटके हुए लोग' (राजा निरबंसियाँ) कृष्णा सोबती कृत- 'सिक्का बदल गया' (सिक्का बदल गया), 'मेरी माँ कहाँ' (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ), अमृतलाल नागर कृत- 'आदमी : जाना-अनजाना' (मेरी प्रिय कहानियाँ), 'आदमी नहीं ! नहीं ! !' (एटम बम) आदि कहानियाँ भारत-पाकिस्तान के विभाजन के कारण हुएँ साम्प्रदायिक दंगों की विभिन्न स्थितियों को उज़ागर करती है।

इन कहानियों में मानवमन की गहराई, नये जीवनमूल्य, भाषा का नवीन रूप, नये प्रतिक, स्त्री-पुरूष संबंधों की तलाश, रूढ़ियों-परंपरा का खण्डन, शिल्पगत नाविन्यता तथा अनुभूतिगत अभिव्यक्ति में निखार पाया जाता है।

तृतीय अध्याय में मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भारत-विभाजन का निरूपण किया है। हिन्दी कहानी साहित्य में सन् १९५० से नयी कहानी का आंदोलन आरंभ हुआ। जिसे स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी भी कहते है। तत्कालीन समय में भारत-पाकिस्तान विभाजन के कारण पूरे देश में अराजकता फैली हुई थी। विभाजन की त्रासदी के कारण एक आम इन्सान की जिन्दगी में आये परिवर्तन, समाज में नारी का स्थान, स्थिति, छटपटाहट, अस्तित्व बोध, अस्तित्व की रक्षा के लिए अनवरत प्रयत्न, संघर्ष और नैतिक-अनैतिक संघर्ष आदि की मार्मिक अभिव्यक्ति तत्कालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत की।

भारत विभाजन के साथ ही समाज में व्याप्त घोर अनाचार तथा राजनैतिक विवादों के पारस्परिक संघर्षो का यथार्थ अंकन इन कहानियों में किया गया। स्वाधिनता संग्राम के दौरान चलाए गए विविध आंदोलन समाज में अल्प संख्यक-बहुसंख्यकों की मानसिकता इसके अंन्दर उभरते नये विश्वास, नयी चेतना सभी को व्यक्त किया गया। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि स्वातंत्र्य सेनानियों का दृष्टिकोण कहानियों के विविध पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया। समग्रतः इन कहानियों में भारत विभाजन के कारण तत्कालीन समाज में व्याप्त आपा-धापी, साम्प्रदायिकता, कलह, मानवीय मूल्यों के ह्रास आदि के चित्रण के साथ जीवन के प्रति पनपने वाले नये मूल्यों का भी सूक्ष्म विवेचन किया गया।

चतुर्थ अध्याय में मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विभाजन का निरूपण कथ्य के परिप्रेक्ष्य में किया है। भारत विभाजन हमारी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत पर काला धब्बा है। सन् १९४७ में स्वतंत्रता मिलने के उपरांत हिन्दी कहानी साहित्य में समाज की जिस उमंग और उत्साह का चित्रण होना चाहिए था वह कुछ ही कहानियों में उभर पाया। इस काल के अधिकांश कहानीकार अपनी कहानियों के कथ्य में असंतोष, क्षोभ, आक्रोश और निराशा को ही अभिव्यक्ति देते रहे क्योंकि आजादी उनकी आशा आकांक्षा और उमंगों को पुरा करने में असमर्थ रही थी। प्रान्त के बटवारे के समय फैली हुई करूण स्थिति का चित्र इन कहानियों में खींचा गया। भारत विभाजन से जनता समुदाय को क्या-क्या यातना सहनी पड़ी, जातिगत दंगों ने भारतीय मूल भावनाओं को किस प्रकार तोडने का प्रयास किया तथा संवेदनहीन मानव प्रकृति का सूक्ष्म विवेचन इन कहानियों के कथ्य में प्रस्तुत किया गया।

यह कहानियाँ जातिगत दंगे-फसादों की करूण गाथा गाती है। हरेक सम्प्रदाय सत्व मानवीय गुण सिखाता है। न जाने क्यों ये धर्म में आडम्बर, अहंकार फैला, मानव-मानव का दुश्मन बन बैठा, जातिगत वि-संवादिता, देश की उन्नत्ति का मार्ग नहीं है। कहानीकारों ने अपनी कहानियों के द्वारा अपनेपन की तथा संस्कृति को विकास की राह पर आगे बढ़ा सकेगी।

पंचम् अध्याय में मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भारत विभाजन का निरूपण शिल्प के परिप्रेक्ष्य में किया है। अनुभव, संवेदना या लगाव मात्र से ही कोई अच्छी कहानी या

कहानीकार नहीं बन सकता। अपने लगावों और अनुभवों की संवेदना की प्रभावाभिव्यक्ति भी जरूरी है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी लेखकों ने अपनी कहानियों में भाषा का खुल्ला प्रयोग किया है। कथा, स्थान और पात्रों के अनुभव भाषा का चयन कहानी को चार चाँद लगाता है। जहाँ लोक जीवन से संबंधित कथानक है वहाँ क्षेत्रिय शब्दावली को यथावत स्वीकार किया गया है। कुछेक कहानीकारों ने कहीं-कहीं अल्प प्रयोगी या द्विवलुक्तप्राय शब्दों का भी प्रयोग अपनी कहानियों में किया है।

शैली की दृष्टि से यह संपन्न कहानी साहित्य रहा है। आत्मकथात्मक, हास्यव्यंग्य प्रधान, नाटकीय वर्णनात्मक, पत्रात्मक, संवेदात्मक, मनोविश्लेषणात्मक आदि शैलियों का बखूबी प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं संस्कृत की सूक्तियाँ भी ध्यानाकर्षित है। उद्धरणात्मक, विवेचनात्मक एवम् ध्वन्यात्मक शैली का प्रयोग देखते ही बनता है। बिम्ब-प्रतिकों का प्रयोग भी बेजोड रहा है। प्रतिकों के माध्यम से कथ्य स्पष्ट किये गये है। कहावतें-मुहावरे का प्रयोग कहानियों के कथ्य को और भी प्रभावक वह मार्मिक बना देता है। कुछेक कहानियों के विवरणों के उलझाव से रचना बोज़िल बन गयी है। विवरणों की अधिकता सम्प्रषणियता से खतरा उपस्थित करती है।

समग्र शिल्प की दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी साहित्य शोध लक्षी और पठनीय रहा है।

छठवे अध्याय में मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विभाजन की विभिषिका और बिनसाम्प्रदायिकता को निरूपित किया है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी साहित्य में एक ओर जहाँ कहानीकार में आर्थिक साम्राज्यवाद, पूजीवाद, बुर्जुआ नेताशाही, जड़ नौकर शाही आदि के विरूद्ध एक भयंकर असंतोष और खीझ की भावना भर गई थी। वह इन सबका विरोधकर एक स्वस्थ, उन्नत और सुखी समाज के निर्माण का अभिलाषी था। वहीं दूसरी ओर अपनी कहानियों के माध्यम से देश विभाजन की विभिषिका और बिनसाम्प्रदायिकता भी अभिव्यंजित की। साम्प्रदायिकता का अर्थ होता है केवल अपने ही सम्प्रदाय की श्रेष्ठता का तथा हितों का विशेष ध्यान रखना। जबकि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी लेखकों ने अपनी रचनाओं में साम्प्रदायिकता की जडों को काँटकर बिनसाम्प्रदायिक समाज रचना का प्रयत्न किया। विभाजन

से उत्पन्न हिन्दू-मुस्लिम जाति के बीच पनपे दंग-फसाद, वर्ग-विग्रह, वैमनस्य, वैषम्य की भावना को इन कहानीकारों ने अपनी कहानियों के द्वारा दूर करने के लिए बिनसाम्प्रदायिकता का प्रचार-प्रसार किया।

इन कहानियों में लेखकों ने विभाजन से पूर्व और विभाजन के पश्चात् जिन सामाजिक किया-प्रतिकियाओं की रूढ़िवादिता की रूपरेखा प्रस्तुत की है वह अत्यंत ही शसक्त एवम् सजीव है। उसके द्वारा समस्त प्रकार की सामाजिक रूढ़ियों एवम् विरोधार्थिओं को स्पष्ट स्वरूप प्रदान किया गया है। अनास्थाएँ एवम् अविश्वास ही नई आस्थाओं और विश्वासों को जन्म देते है। पर यह तभी संभव हो सकता है जब दृष्टिकोण स्वस्थ हो सामयिक चेतनाओं से परिचालित हो, परिगामित या प्रतिगामित न हो।

कृतज्ञता ज्ञापन

अध्ययन विषय से सम्बन्धित ज्ञानवर्धन करने के लिए सर्व प्रथम सर्वश्री एवम् हरवक्त मेरा हौंसला बुलंद करनेवाले परम् पूजनीय गुरूवर्य प्रो. डॉ. एच. एन. वाघेला साहब, प्रोफेसर एवम् विभागाध्यक्ष, स्नाकोत्तर हिन्दी विभाग (हिन्दी भाषा साहित्य भवन) भावनगर विश्व विद्यालय भावनगर, जिन्होंने मुझे समय-समय पर जो मार्गदर्शन दिया है तथा शोध ग्रंथ के लिए प्रेरित किया है उनके लिए मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। प्रस्तुत शोध ग्रंथ डॉ. एच. एन. वाघेला साहब के कुशल निर्देशन में ही तैयार किया गया है। विषय चयन से लेकर संपूर्णता तक डॉ. वाघेला साहब ने जिस सरलता एवम् सहृदयता से मुझे प्रोत्साहित करते हुए मार्गदर्शन दिया है जिसका सहयोग मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेगा।

यह मेरा सद्भाग्य है कि मुझे परम् वंदनीय गुरूवर्य मार्गदर्शक डॉ. एच. एन. वाघेला साहब के मार्गदर्शन में 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि प्राप्त करने का सुअवसर मिला। कई प्रकार की सामाजिक एवम् आर्थिक प्रतिकुलताओं के बीच यदि डॉ. एच. एन. वाघेला साहब का सुयोग्य मार्गदर्शन नहीं मिला होता तो यह शोधकार्य पूर्ण करना मेरे लिए शायद ही संभव था।

साथ ही साथ मेरे एम. फिल. के मार्गदर्शक परम् वंदनीय गुरुवर्य प्रो. डा. नवनीत चौहान साहब, प्रोफेसर एवम् विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्व विद्यालय, वल्लभ विद्यानगर (आणंद) ने मेरे इस पीएच. डी. के कार्य में अभिभावक के रूप में विषय चयन एवम् इस शोध ग्रंथ के अध्यायों के संदर्भ में जो मुझे प्रोत्साहित करते हुए मार्गदर्शन दिया है, उसके लिए मैं उसका सदा ऋणी रहूँगा और उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

यह शोध ग्रंथ मेरी गहन लगन और अथाक परिश्रम का प्रतिफल है और यह मेरे इस परिश्रम में सहभागी बने अनेकों महानुभावों के प्रत्यक्ष एवम् परोक्ष सहयोग का सुफल भी है।

मेरे इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए विभाग के गुरूजनों में डा. खान साहब तथा डा. सीमा बहन राठोड हिन्दी विभाग एवम् डा. एच. एल. चावडा साहब विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, भावनगर विश्व विद्यालय भावनगर, एवम् विभाग के जिन महानुभावों से मुझे समय-समय पर आवश्यक मार्गदर्शन मिलता रहा है। आप सभी मेरे लिए आदरणीय है।

पुस्तकालय से प्राप्त सुविधाओं के लिए मैं भावनगर विश्व विद्यालय ग्रंथालय भावनगर, भाईकाका ग्रंथालय वल्लभविद्यानगर आणंद, गुजरात विद्यापिठ ग्रंथालय अहमदाबाद, सौराष्ट्र विश्व विद्यालय ग्रंथालय, राजकोट, एस. एन. डी. टी. महिला कोलेज ग्रंथालय भावनगर, महिला कोलेज ग्रंथालय भचाऊ एवम् तोलाणी कोलेज ग्रंथालय आदीपुर (कच्छ) के पुस्तकालयाध्यक्षों व सहयोगियों का भी ऋणी हूँ।

मैं उन समस्त लेखकों एवम् प्रकाशकों के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी कृतियाँ के माध्यम से मुझे अपने अध्ययन विषय को समझने में सहायता मिली।

विशेषकर प्रस्तुत शोध-प्रबंध के मुद्रण कार्य में सहायता पहुँचाने वाले मेरे तीन अंतरंग मित्रों सुमित सोनी, चौहाण हंसराज एवम् जितेन्द्र बारोट जिन्होंने अपना निजी काम छोड़कर मेरे शोध-कार्य को महत्ता देकर हरवक्त मेरा साथ दिया है उनके लिए मैं उनका चीर ऋणी हूँ।

शोध कार्य को पूर्ण करने में विभिन्न रूप से सहयोग, सहायता एवम् अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध कराने के लिए मैं अपने मित्रों, सहयोगियों एवम् निकट सम्बंधियों, सर्वश्री डॉ. जीतेन परमार जिन्होंने मुझे पीएच.डी. का शोध प्रबंध तैयार करने में शुरुआत से लेकर आखिर तक जो सहायता की है उसके लिए मैं उनका सदा आभारी रहूँगा। साथ-ही-साथ मैं महिला कोलेज भचाऊ के आचार्य श्री भरतभाई मोढ़पटेल एवम् सह अध्यापक मित्रों, मेरी कोलेज की छात्रा हेतल पंड्या, मीनाक्षी बारोट, चंपा परमार तथा वाणी विनायक आर्ट्स एन्ड कोमर्स कोलेज भचाऊ के संचालक श्री शीवलालभाई पटेल, आचार्य श्री नारणभाई दुबरिया एवम् मेरे अध्यापक मित्रों का आभारी हूँ। शोध कार्य के दौरान जिन अजिज मित्रों का स्नेह एवम् सहयोग मिला उन्हें मैं इस वक्त कैसे भूल सकता हूँ, जिनमें तुषार प्रजापति, मुकेश नाकराणी (डॉ/मुनो), पिंटु नाकराणी, हर्मेश चोपड़ा, मेरी साली संगीताबहन एवम् छाया, किशोर नाकराणी, पंकज नाकराणी, अश्विन नाकराणी, अल्पेश नाकराणी, विशाल वासाणी, विजयभाई सुतरिया, चेतन देसाई, धर्मेन्द्रभाई देसाई, कनु देसाई, विजय चोपड़ा, जिज्ञेश सुमरा, भरत ठंठ, सुरेश नाकराणी, सुरेशभाई सवाणी, किशन मियात्रा, अतुलभाई नाकराणी, महेन्द्र अणघण, मुकेश अणघण, अशोक अंकल इन सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

इस शोध कार्य के दौरान मुझमें उत्साहवर्धन और हौंसला बनाये रखने में जिसने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है ऐसी मेरी धर्मपत्नी 'काजु' को भी याद करते मैं अपने आप को धन्य समझता हूँ।

अंत में मैं अपनी श्रध्येय माताश्री श्रीमती हंसाबहन एवम् पिताजी श्री दयालभाई, मेरी सास श्रीमती सविताबहन एवम् ससुर श्री मनजीभाई, चाचाजी श्री हेमराजभाई एवम् चाचीजी श्रीमती मंजुलाबहन, मौसी श्रीमती कुंवरबहन एवम् मौसा शीवाभाई, मेरी बहन भारती तथा मेरे जीजाजी अरविंदकुमार, ताऊँजी हिरजीभाई, चाचा श्री लालजीभाई, लींबाभाई एवम् प्रविणभाई, भाई श्री भुपतभाई नाकराणी मेरे बडे सुरेशभाई एवम् चेतनभाई आदि के चरण कमलों में नतमस्तक हूँ। जिनकी सतत प्रेरणा व वात्सल्यपूर्ण स्नेह की छाया में हीं यह शोध कार्य पूर्ण हो सका है।

अंत में एक पीएच.डी. का शोध छात्र होने के नाते मैं यह कहना उचित समझता हूँ कि यह मेरे जीवन का प्रथम प्रयास है। इस शोध ग्रंथ में जो भी कुछ श्रेष्ठ है, वह मेरे निर्देशक डॉ. एच. एन. वाघेला साहब एवम् गुरूजनों के ज्ञान का संचार है तथा इसमें जो भी कुछ क्षतियाँ तथा दोष रह गए होंगे वे सब मेरे अपने हैं।

➢ नाकराणी महेशकुमार दयालभाई।